

प्रेषक,

राजकुमार सिंह,
अपर शचिव
उत्तरांचल शासन।

सेवाने,

जिलाधिकारी,
देहरादून।

आपदा प्रबन्धन एवं पुनर्वास

देहरादून: दिनांक २५ मार्च, 2004

विषय:—जनपद देहरादून में दैवी आपदा से क्षतिग्रस्त विभागीय परिसम्पत्तियों के मरम्मत एवं पुर्णनिर्माण कार्य हेतु वर्ष 2003-04 में धनावंटन।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्र नं. २१८/तेरह-आपदा/2003-04, दिनांक 17.3.2004, के सदर्भ में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि जनपद देहरादून क्षेत्रांतर्गत दैवी आपदा से क्षतिग्रस्त विभागीय परिसम्पत्तियों के मरम्मत/पुर्णनिर्माण कार्य हेतु उपलब्ध कराये गये एक कार्य हेतु ₹० ९,७७ लाख के आगणन के विपरीत तकनीकी परीक्षण के उपरान्त टी.ए.सी. द्वारा संस्तुत लागत के अनुसार संलग्न विवरणानुसार ₹० ९,७६,०००/- (₹० नो लाख पिंडहातर हजार मात्र) की धनराशि के ब्यय की स्वीकृति श्री राज्यपाल महोदय सहर्ष प्रदान करते हैं।

२— स्वीकृत धनराशि निम्न प्रतिवर्धी के साथ आहरित की जायेगी:-

१— आगणन में उल्लिखित दरों का विश्लेषण के सम्बन्धित विभाग के अधीक्षण अभियन्ता से दरों की स्वीकृति कार्य कराने से पूर्व अवश्य की जाय।

२— कार्य कराने से पहले समस्त औपचारिकताएँ तकनीकी दृष्टि को मध्य नजर रखते हुए एवं लोक निमाण विभाग द्वारा प्रधालित दरों/ विशेषदों के अनुलम्ब ही कार्यों का सम्पादित कराते समय पालन करना सुनिश्चित करें।

३— कार्य कराने से पूर्व क्षम से कम अधीक्षण अभियन्ता सार के अधिकारी स्थल का निरीक्षण कर लें, तथा यह सुनिश्चित करें कि आगणन में जो प्राविधिक इंगित विषय नहीं हैं वह स्थल की आवश्यकतानुसार ही अपदा नहीं, स्थल आवश्यकतानुसार ही कार्य कराना सुनिश्चित करें।

४— कार्य कराने से पूर्व स्थल आवश्यकतानुसार विस्तृत आगणन/ भानुष्ठित गठित कर सक्षम प्राधिकारी से प्राविधिक स्वीकृति प्राप्त कर लें, दिना प्राविधिक स्वीकृति के कार्य प्रारम्भ न किया जाय एवं वित्तीय नियमों का पालन कराई से किया जाय एवं जिन आगणनों में रिस्तप लिया गया है, कार्य कराने से पूर्व नाप पुस्तकों से रिकार्ड मेजरमेन्ट इंगित अवश्य कराये जाए, तथा इसका सत्यापन अधित अन्ने० स्वयं करें।

५— आगणन में जिन सदों हेतु जो राशि ऑफिलित / स्वीकृत की गई हैं। व्यव उसी सद में किया जाय, एक सद की राशि दूसरी सदों में किसी भी दशा में न किया जाय। इस का पूर्ण उत्तरदायित्व निमाण ईकाई का होगा।

६— स्वीकृत धनराशि कार्यदारी संस्था को अवमुक्त करने से पूर्व जिलाधिकारी द्वारा पुनः यह सुनिश्चित कर लिया जायेगा कि उक्त कार्य दैवी आपदा से क्षतिग्रस्त है। भारत सरकार के दिशा निर्देशों से आच्छादित है। संलग्न सूची में भी दो कोई कार्य मध्य हो उस कार्य को भिरत्त कर शासन को शीघ्र अवगत कराया जायेगा, और इसके लिये स्वीकृत धनराशि शासन को तत्काल समर्पित कर दी जायेगी।

७— कार्य प्रारम्भ से पूर्व जिलाधिकारी द्वारा यह सुनिश्चित कर लिया जायेगा कि उक्त कार्य हेतु किसी अन्य विभागीय बजट अवश्य इस बजट से कोई धनराशि स्वीकृत नहीं की गयी है, यदि स्वीकृति प्राप्त हुई है तो उसकी समायोजित करते हुए अवश्य धनराशि को इस धनराशि में से ब्यय की जायेगी तथा जिलाधिकारी द्वारा धनराशि निर्माण संस्था/विभाग को तब ही अवमुक्त की जायेगी, जब इस बात की लिखित रूप में पुष्टि हो जायें।

८— दैवी आपदा राहत निधि से कृत कार्यों का यथास्थान विस्तृत कर इसकी लागत, निर्माण एजेन्सी का नाम, कार्य प्रारम्भ य अन्त करने की तिथि का झंकन कर दिया जायेगा।

3— स्वीकृत धनराशि कार्यदायी संस्था को तत्काल अवमुक्त किया जाना सुनिश्चित करें। स्वीकृत धनराशि संलग्नक में निर्दिष्ट कार्य एवं प्रयोजनों हेतु व्यय की जायेगी, अन्य कार्यों में व्यय नहीं जायेगी। धनराशि का गलत उपयोग न किया जाय, गलत उपयोग होने पर सम्बन्धित अधिकारी एवं कार्यदायी संस्था का ही पूर्ण उत्तरदायित्व होगा। नद परिवर्तन करने का अधिकार उनके पास नहीं रहेगा। यदि इनित योजनाओं पर धनराशि किन्हीं परिस्थितियों में व्यय नहीं हो सकती है, तो धनराशि शासन को समर्पित कर दी जायेगी। मरम्मत कार्य शीघ्र प्रारम्भ किये जायेंगे।

4— स्वीकृत की जा रही धनराशि का दिनांक 31.3.2004 तक उपयोग कर लिया जायेगा और कार्यों की वित्तीय एवं भौतिक प्रगति का विवरण तथा उपयोगिता प्रमाण पत्र शासन को उपलब्ध करा दी जायेगी।

5— कार्य की गुणवत्ता एवं समयबद्धता के लिए संबन्धित निर्माण एजेन्सी/अधिकारी अभियन्ता पूर्ण रूप से उत्तरदायी होंगे। कार्य इसी लागत में पूर्ण कर लिया जायेगा और इस लागत में कोई पुनरीक्षण अनुमन्य नहीं होगा।

6— उक्त कार्य इसी लागत में पूर्ण कर लिए जायेंगे, और इन पर लागत में कोई पुनरीक्षण अनुमन्य नहीं होगी। कार्य कराते समय नियमानुसार टैण्डर के नियमों का अनुपालन किया जायेगा।

7— कार्य प्रारम्भ करने एवं कार्य सम्पन्न होने के पूर्व यदि सम्बद्ध हो तो क्षतियों से कार्ययोजनाओं की फोटो लेकर जिलाधिकारी को उपलब्ध करा दी जायेगी, ताकि कार्य की सत्यता का प्रमाणीकरण किया जा सकें।

8— यदि सड़क की पुनर्स्थापना का कार्य या अन्य कार्य जो किसी दिनांक वजट से करा लिया गया है तो उक्त कार्य के लिये निधि से स्वीकृत वी जा रही धनराशि का आहरण नहीं किया जायेगा और धनराशि राजकोष में जमा करा दी जायेगी। उक्त के स्थान पर कोई वैकल्पिक योजना स्वीकृत नहीं की जायेगी।

9— स्वीकृत धनराशि शासनादेश संख्या— 372(13)/आ10प्र0/2003 दिनांक 20.9.2003 के द्वारा किये गये जनपदवार एलोकेशन द्वारा स्वीकृत ₹0 200 करोड़ की धनराशि में से ही स्वीकृत की गई है।

10— उक्त पर होने वाला व्यय छासू दित्तीय वर्ष 2003-04 के आय-व्ययक अनुदान संख्या— 6 के अतर्गत लेखाशीर्षक 2245 — प्राकृतिक विपत्तियों के कारण राहत -05 आपदा राहत निधि—आयोजनागत 800— अन्य व्यय -01— केन्द्रीय आयोजनागत/ केन्द्र द्वारा पुरोनिर्धारित योजनाये -01 राष्ट्रीय आपदा राहत निधि से व्यय— 42—अन्य व्यय ले नामें डाला जायेगा।

11— यह आदेश वित्त विभाग के अ.शा. संख्या— 3472/पि० अनु०-३/2003, दिनांक 26 मार्च, 2004 में प्राप्त सहमति से जारी किये जा रहे हैं।

भवदीय,

(राजकुमार सिंह)
अपर सचिव

संख्या एवं दिनांक संपरोक्त।

प्रतिलिपि— निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यदाही हेतु प्रेषित—

1. महालेखाकार, उत्तरांचल (लेखा एवं हकदारी) ओरेंजिय बिल्डिंग, माजरा, देहरादून।
2. निजी सचिव, मा. मुख्य मंत्री।
3. श्री एल.एम.पन्त, अपर सचिव/वित्त एवं व्यय अनुभाग।
4. डॉ. राकेश गोयल, राज्य सूचना अधिकारी, एनआईसी, सचिवालय परिसर, देहरादून।
5. कोषाधिकारी, देहरादून।
6. वित्त अनु— 3, उत्तरांचल शासन।
7. धन आवंटन संबन्धी पत्रावली।
8. गार्ड फाइल।

आशा जे.

27/03/2004

(राजकुमार सिंह)

अपर सचिव